

কখনো তুমি হারাও না প্রভু, আমি নিজের দোষে দেখি না তোমায়!
আমি কৃষ্ণ বসনে ঢেকে আঁখি আহ্বান করি জড়তার তমসায়।।

তুমি আলো জ্বালো, আমি মেঘে ঢাকি, তুমি সে মেঘের ফাঁকে ফাঁকে চলো ডাকি'।
সেই আলোর মাঝে আমি কাজল রাখি, তুমি সে কাজল অলক্ষ্যে পরাও আমায়।।

তুমি ফুলে সাজাও, আমি কীটে কাটি, তুমি সোণালী রেখা, আমি মরণ কাঠি।
তব স্বর্ণবেলায় আমি বালুকা মাটি, তুমি সে মাটিতে রচে' যাও শ্যামল ধরায়।।

তাল: কাহারবা (৮ মাত্রা)

	+					o				+					o							
II	গপা	পা	পা	ক্ষা		পা	-	পা	-	I	পধা	ধা	পা	মা		গা	রা	গা	গসা	I		
	কo	খ	নো	তু		মি	o	হা	o		রাo	ও	না	প্র		ভু	o	আ	মিo			
																	॥					
I	সা	সা	র-	রা		রা	-	রা	গা	I	রা	রগা	গা	সা		-	-	গা	মা	I		
	নি	জে	oর্	দো		ষে	o	দে	খি		না	তোo	মা	o		য়	o	আ	মি			
I	মপা	-	পা	ক্ষা		পা	পা	পা	-	I	পধা	-	পা	মা		গা	রা	-	-	I		
	কুo	oষ্	ণ	ব		স	নে	টে	o		কেo	o	আঁ	o		খি	o	o	o			
I	সা	সরা	রা	-		রা	গা	রা	গা	I	মা	-পা	পা	মা		গা	-	গা	গসা	I		
	আ	হo	বা	oন্		ক	রি	জ	ড		তা	oর্	ত	ম		সা	য়	আ	মিo			
I	সা	সা	র-	রা		রা	-	রা	গা	I	রা	রগা	গা	সা		-	-	-	-	II		
	নি	জে	oর্	দো		ষে	o	দে	খি		না	তোo	মা	o		o	o	য়	o			
গা	মা	II	মপা	-	পা	ক্ষা		পা	-	পা	পা	I	পধা	-	পা	মা		গা	রা	-	গা	I
তু	মি		আo	o	লো	জ্বা		লো	o	আ	মি		মেo	o	যে	ঢা		কি	o	o	o	
I	মপা	-	-	ক্ষা		পা	-	পা	-	I	-ধা	-	পা	মা		গা	রা	গা	মা	I		
	আo	o	o	o		o	o	আ	o		oo	o	o	o		o	o	তু	মি			
I	মপা	-	পা	ক্ষা		পা	-	পা	পা	I	পধা	-	পা	মা		গা	রা	গা	গসা	I		
	আo	o	লো	জ্বা		লো	o	আ	মি		মেo	o	যে	ঢা		কি	o	তু	মিo			
I	সা	সরা	রা	-		রা	গা	রা	গা	I	মা	-পা	পা	মা		গা	-	গা	মা	I		
	সে	মেo	যে	oর্		ফাঁ	কে	ফাঁ	কে		চ	oo	লো	ডা		কি	o	সে	ই			
I	মপা	পা	-	ক্ষা		পা	-	পা	পা	I	পধা	ধা	প-	মা		গা	রা	গা	গসা	I		
	আo	লো	oর্	মা		ঝে	o	আ	মি		কাo	জ	oন্	রা		খি	o	তু	মিo			
I	সা	সরা	রা	-		রা	গা	র-	গা	I	মা	মা	পা	মা		গা	-	গা	গসা	I		
	সে	কাo	জ	oন্		অ	ল	oখ্	খে		প	রা	ও	আ		মা	য়	আ	মিo			

